राजस्थानी समकालीन कलाकार 'ललित शर्मा' जी की कला का विवेचनात्मक अध्ययन

ज्योति रानी
शोधार्थिनी, ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
ईमेलः pawankumarjyoti@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

ज्योति रानी

राजस्थानी समकालीन कलाकार 'ललित शर्मा' जी की कला का विवेचनात्मक अध्ययन

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. I, Article No. 13 pp. 079-083

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-1-jan-june-2021/

सारांश

*राजस्थानी समकालीन कलाकार 'श्री ललित शर्मा' जी एक ऐसे कलाकार है जिन्होंने अपनी कलाकृतियों के माध्यम से चित्रकला जगत में एक विशेष योगदान दिया है। इन्होंने मुख्यतः अपनी कलाकृतियों में मेवाड़ के **राजस्थानी** स्थापत्य को चित्रित किया है। इन्होंने आधुनिक कला में बहुत अधिक कार्य किया किन्तु इन्होंने पारंपरिक कला को पूर्ण रुप से कभी नही छोड़ा क्योंकि पारंपरिक लघु चित्रकला इन्हें इनके पूर्वजो की देन है तथा पारंपरिक कलात्मक भूमि में जन्म होने के कारण वहाँ की कला का प्रभाव इन पर आरम्भ से ही पड़ने लगा जो पूर्ण रुप से अब भी लुप्त नही हुआ।*

'ललित शर्मा' जी ने पारंपरिक लघु चित्रकला और आधुनिक कला को मिलाकर जिस प्रकार प्रस्तुत किया है यह कार्य अद्वितीय है इनकी कलाकृतियों में मेवाड़ के दरबारों, महलो, गढ, किला आदि सभी जगहों के दर्शन दृष्टिगत होते है यही इनकी कलाकृतियों की मुख्य विशेषता है। 'ललित शर्मा' जी जितने महान कलाकार है उतना ही साधारण उनका व्यक्तित्व है। प्रशंसा के मोह को त्याग कर ये निरन्तर चित्रण कार्य कर रहे है।

भारतीय चित्रकला जगत में राजस्थानी कला शैली एक महत्वपूर्ण कला षैली रही है। प्रारम्भ से ही चित्रकला क्षेत्र में इसका विशेष योगदान रहा है तथा राजस्थानी कला में समकालीन कलाकारो ने भी विशेष योगदान दिया है। राजस्थानी कला के नवीनीकरण में समकालीन कलाकारों का एक विशेष महत्व है। क्योंकि राजस्थानी कला में जब विदेशी तत्वों का समावेश होने लगा था तब राजस्थानी कला का अपना विशेष महत्व कम होने लगा क्योंकि यहाँ के कलाकार भी अंग्रेजो के अधीन रहकर ही कार्य करने लगे थे। किन्तु तब कुछ समकालीन कलाकारों के द्वारा राजस्थानी कला पुनः अपनी महत्ता प्राप्त करने लगी। इन्ही समकालीन कलाकारो के क्रम मे ही समकालीन कलाकार 'श्री ललित शर्मा' जी ऐसे कलाकार हुए जिन्होंने राजस्थानी कला की परंपराओं को आधुनिक शैली के साथ समायोजित करके चित्रण किया है। इन्होंने मुख्यतः पिछवई और लघु चित्रकला को आधुनिक शैली में बनाकर एक नवीन शैली में कार्य किया है। इन्होंने राजस्थान के राजप्रसादो, हवेलियों, किलो, गढ आदि को बहुत ही खुबसुरती के साथ धरातल पर उतारकर प्रदेश की गौरवमयी विरासत को दर्शको के समक्ष प्रस्तुत किया।

प्रस्तावना

जीवन परिचय

राजस्थान के उदयपुर शहर के पास भगवान श्रीनाथ जी की नगरी नाथद्वारा में ललित शर्मा जी का जन्म सन् 1953 ई0 में हुआ। यह नगर धार्मिक दृष्टिकोण से बहुत ही पावन व पवित्र है। क्योंकि यहा भगवान श्रीनाथ जी का बहुत ही पवित्र व आकर्षक मंदिर है। ललित शर्मा जी के पिता का नाम श्री घनश्याम शर्मा था। चित्रकला का दौर इनके परिवार में इनके पूर्वजों के समय सही ही चलता आ रहा है। इनके पूर्वजो को जांगिड कहा जाता है। ''जांगिड मेवाड की प्राचीन कला और संस्कृति को मेवाड़ की कला में जारी रखने के लिए जाने जाते है। जांगिड़ नाम ऋषि अंगिरा के नाम पर आता है जो उनका दूसरा नाम था। बाद में उनके अनुयायियों को जांगिड के नाम से जाना जाता था।''[1] इनके पूर्वज दक्षिण भारत से यहां आये थे, लगभग दूसरी शताब्दी में काशी की यात्रा करने के लिए। इसके बाद कुछ लोग राजस्थान के मेवाड़ व अजमेर राज्यों में ही रह गए तथा यही रहने लगे। ''ललित शर्मा के एक पूर्वज माणाजी नाथ–द्वारा में 1972 में बसे थे। वे अपने समय के बहुत विख्यात चित्रकार थे।''[2] इनके बाद इनकी पीढ़ी के सभी लोग चित्रकार रहे। अपनी कला के माध्यम से इन्होंने बहुत प्रसिद्धि पाई।

ललित शर्मा जी के दादा स्व0 श्री नरोत्तम नारायण जी ने पिछवई चित्रण में बहुत अधिक कार्य किया इन्होंने तैलीय चित्रण तकनीक में भी कार्य किया तथा पोरट्रेट (व्यक्ति चित्रण) में इन्हें विशेष स्थान प्राप्त हुआ इन्होंने देवी–देवताओं का चित्रण इस प्रकार किया कि उनमें कलंडर की छवि महसूस होने लगी। जिस प्रकार राजा रवि वर्मा ने कैलेंडर की छवि वाले चित्र बनाये थे। इनके पिता भी कुशल चित्रकार थे। ''अतः ललित शर्मा जी को अपने पूर्वजों से अद्वितीय कला कौशल विरासत में मिला।''[3] इनके परिवार की तीन पीढ़ियों के लोगों ने दरबारों में तथा स्वतंत्र कलाकार के रुप में भी कार्य किया। इसी कारण पारंपरिक कला तथा भारतीय कला संस्कृति का इनकी कला पर प्रारम्भ से ही प्रभाव दृष्टिगत होता है।

इन्होंने ड्राइंग और पेंटिंग की मास्टर की डिग्री सन् 1975ई0 उदयपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त की। यह वर्ष इनके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण वर्ष रहा क्योंकि सन् 1975 में ही इन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा कला क्षेत्र में इनके महत्वपूर्ण कार्य के लिए राज्य स्तरीय पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया। इन्होंने हमेशा एक स्वतंत्र कलाकार के रुप में कार्य किया। इन्होंने किसी के अधीन रहकर कार्य करना स्वीकार नही किया।

व्यक्तित्व

राजस्थान के नाथ द्वारा, उदयपुर में जन्में ललित षर्मा जी बहुत ही साधारण स्वभाव के व्यक्ति है। ये वाणी में बहुत ही मित्तभाषी है तथा बहुत ही कोमल और दयालु ह्रदय के व्यक्ति है। जैसे स्वभाव में ये साधारण से व्यक्ति है उसी प्रकार इनका घर भी बहुत ही साधारण रुप में बना हुआ है। इन्होंने अपने कला कार्य के लिए अपना स्टूडियों अपने घर में ही बना रखा है। ये अपने पूरे परिवार के साथ ही उदयपुर में रहते है।

कृतित्व

श्री ललित शर्मा जी ने अपने कलात्मक जीवन का प्रारम्भ राजस्थान की प्राचीन कला संहिति

''टखमण–28'' के सदस्य के रुप में रहकर किया। ललित शर्मा जी ने बाकी संसार के कला कोश को अपनी आत्म अभिव्यक्ति के लिए जितना महत्वपूर्ण माना है उतना ही इन्होंने अपनी परंपराओं को भी महत्वपूर्ण माना। इसी कला प्रशिक्षण के साथ ये बडे हुए। किन्तु इन्हें आधुनिक कला का प्रशिक्षण कहीं ओर से लेना पड़ा क्योंकि इनके परिवार में पारंपरिक कला का महत्व अधिक था इसी कारण इन्होंने पिछवई और लघु चित्रकला को आधुनिक कला के साथ मित्रित करके चित्र बनाये। इन्होंने अपने चित्रों में प्रकृति को मुख्य रुप से चित्रित किया किन्तु प्रकृति के विभिन्न रुपों को इन्होंने आधुनिक रुप में बनाया है। इन्होंने धार्मिक चित्रण कम ही किया। इन्होंने अपनी कलाकृतियों में देवी–देवताओं का चित्रण बहुत कम किया किन्तु इनके चित्रों में मंदिर मुख्य रुप से देखे गये है।

ललित शर्मा जी ने अपने चित्रण के मुख्य विषय के रुप में साधारण लोगों के चित्र बनाये। जैसे सब्जी बेचने वाली महिला, जलेबी बनाने वाला, ठठेरा तथा मोची चित्र आदि। इनके चित्रों में पिछवई और लघु चित्रकला में प्राकृति तथा वास्तुकला को मुख्य रुप से दर्शाया है। किन्तु इन्होंने प्राकृति तथा वास्तुकला के विभिन्न रुपों को आधुनिक रुप में बनाया है। इन्होंने ''समकालीन भारतीय कला में अपनी रुची को स्थानांतरित कर दिया और इनकी अभिव्यक्ति का मीडिया कैनवास पर तेल में है।''[4] अपने चित्रण काल के प्रारम्भ इन्होंने राजस्थान के वास्तुकला, ईमारतों और महलों को विशेष रुप से चित्रित किया जो इनकी आरम्भिक कृतियों से स्पष्ट होता है। जैसे वहाँ की गलियां इमारतें, पेड, महल तथा वहां का स्थानीय वातावरण आदि।

आधुनिक शैली में बनाये चित्रों में पिछवई और लघु चित्रकला में प्रकृति और वास्तुकला का एक अद्‌भुत समावेश है किन्तु इनके चित्रों में प्रकृति और घरो को इन्होंने अलग रुप से बनाया है। कहीं–कहीं पर इनके बनाये बादल विशाल गुब्बारों की तरह प्रतीत होते है तथा आकाश में छाये हुए है इसी प्रकार इनके बनाए घर भी पुराने महल प्रतीत न होकर किसी मेवाड़ी परिवार के आधुनिक घर है। पारंपरिक भारतीय पृष्ठभूमि इन्हें इनके पूर्वजो से विरासत के रुप में प्राप्त हुई है। नाथद्वारा की परम्परागत भारतीय कला भी इनके परिवार से सम्बन्धित रही है। इसका निमार्ण इनके पूर्वजो ने जारी रखा था तथा नाथद्वारा की चित्रकला में अपना विशेष योगदान दिया। इन्होंने राजपूत चित्रकला तथा मेवाड़ की कला में भी कार्य किया।

राजस्थान में बने लघु चित्रों में प्रारम्भ से ही कृष्ण भक्ति का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहां पर चित्रकारों द्वारा कला को भक्ति का मार्ग माना जाता है। इसी कारण इन्होंने यहां के मंदिरों, हवेलियों तथा पिछवाइयों पर बहुत अधिक चित्रण कार्य किया। उसी प्रकार ललित शर्मा जी ने चित्रण कार्य किया उनके बने चित्रों में बहुत अधिक कृष्ण लीला दृष्टिगत होती है क्योकि ललित शर्मा जी जहाँ पैदा हुए वह कृष्ण भूमि है वहाँ का वातावरण उनकी कला में दृष्टिगत होता है तथा इन्होंने आधुनिक कला में प्रशिक्षण लिया जिसके फलस्वरुप इन्होंने पिछवई और लघु चित्रकला का आधुनिक कला में अद्‌भुत मिश्रण करके चित्रण किया।

नाथद्वारा में पिछवई चित्रण करने के पीछे एक ऐतिहासिक कारण है यहाँ वल्लभाचार्य जो प्रमुख रुप से कृष्ण भक्त थे तथा पुष्टिगामी सम्प्रदाय के अनुनायियों के लिए नाथद्वारा एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। यहां श्रीनाथ जी का विशाल तथा प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर में श्री कृष्ण की एक काले

संगमरमर में बनी हुई मूर्ति है जो मथुरा से यहां 17वी शताब्दी में लायी गई तथा स्थापित की गई। इस मूर्ति के पीछे कपड़े पर पिछवई चित्र बनाकर लगाये जाते है। यह कला शैली लघु चित्रकला शैली का ही एक भाग है। पारंपरिक पिछवई जो बनते है उन्हें खनिज और वनस्पतिक रंगो द्वारा बनाया जाता है। इन चित्रों में मुख्यतः कृष्ण और राधा के साथ प्राकृति वातावरण को दर्शाया जाता है।

ललित शर्मा जी ने राजस्थान के राजप्रसादो, हवेलियों, गढ तथा किलो को कैनवास पर इस तरह उतारा है कि राजस्थान के गौरवमयी, पुरावैभव तथा समृद्धिशाली सांस्कृतिक विरासत की झलक दृष्टिगत होती है। इन्होंने अपने चित्रों में मेवाड़ के राजभवन, झरोखे, गलियारों आदि का भी चित्रण किया किन्तु अपने चित्रों में इन्होंने उदयपुर के ऐतिहासिक किलो, महलो, हवेलियो को अपनी व्यक्तिगत सोच के आधार पर चित्रित किया। ललित शर्मा जी अपने कला संसार में मुख्यतः इमारतों, हवेलियों, गढ किलो, ताल तलैया, अट्टालिकाएँ, उद्यानों को ही कैनवास पर उतार रहे है। तैलीय रंगो में बनी उनकी कृतियों में पहाड़ों के आसपास बने महलो के इर्द–गिर्द बबूल के पेड़ों तथा वहां उगे फूलो के कारण प्राकृति सौन्दर्य बहुत ही मनमोहक लगता है तथा इन्होंने पहाड़ो के चित्रण में तलहटी में बने पारंपरिक बहुमंजिल इमरतों तथा मैदानी इलाकों में जो घर बने है उनको भी इन्होंने अपने चित्रों मे दर्शाया है। इमारतों को समूह रुप में उन्होंने बहुत ही संयोजित रुप में प्रस्तुत किया है। ललित शर्मा जी अमूर्त चित्रों की श्रृंखलाए भी चित्रित कर रहे है। इन्होंने राजस्थान के स्थापत्य को भिन्न–भिन्न रुपों में चित्रित किया है।

सम्मान व पुरस्कार

'ललित शर्मा' जी का कार्य मुंबई में ताज ग्रुप ऑफ होटलस, कार्डिफ में न्यू लाइब्रेरी, जवाहर कला केन्द्र और जयपुर में ''एलकेए सहित कई संग्रह का हिस्सा रहा है। उन्हें राजस्थान ललित कला अकादमी पुरस्कार तीन बार प्राप्त हुआ।''[5] भारत की स्वतंत्रता की 50वी वर्षगाठ पर इन्हें आईफैक्स द्वारा सन् 1997 ई0 में आयोजित जयपुर की प्रदर्शनी में पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके बाद इनकी चित्रित कृतियों द्वारा सन् 1972–73ई0 में इन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। इसके बाद तूलिका कलाकार परिषद द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया। उदयपुर में भी इन्हें 3 बार सम्मानित किया गया तथा जयपुर द्वारा भी इन्हे सम्मान प्राप्त हुआ। इन्होंने अपनी कला द्वारा राज्य स्तर व राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष ख्याति प्राप्त की। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय अनेक संग्राहको के पास इनकी कृतियां आज भी सुरक्षित है।

धनबाद, झारखण्ड द्वारा भी ललित शर्मा जी को सन् 2001 में रजत पदक प्राप्त हुआ। इसके पश्चात् तिलक स्मारक पूणे द्वारा वर्ष 2002–03 में इन्हें वहां की कला प्रदर्शनी का मेरिट प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त भी बहुत सी जगह से इन्हें सम्मान व पुरस्कार प्रदान किया गया।

प्रदर्शनियां

श्री ललित शर्मा जी ने अपनी एकल व सामूहिक बहुत सी प्रदर्शनियां आयोजित की है। ''इन्होंने 1981– जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुंबई, 1996–रवि शंकर रावल, अहमदाबाद, 2000–बजाज आर्ट गैलरी, मुंबई, 2001– जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुंबई, 2002–जुनैजा आर्ट गैलरी, जयपुर, 2010– जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुंबई, 2012–गैलरी आर्टचिल अम्बर पैलेस, जयपुर, 2012–आर्ट कोरीडोर लि मैरीडियन, जयपुर, 2012– जुनैजा आर्ट गैलरी, जयपुर''[6] आदि अनेक एकल प्रदर्शनियां की। इसके अलावा इन्होंने जहाँगीर

आर्ट गैलेरी, मुंबई, ललित कला अकादमी, कलकत्ता और उदयपुर, मद्रास, नई दिल्ली, अहमदाबाद, जयपुर, गोवा, आदि अनेक स्थानों पर अपनी सामूहिक प्रदर्शनियां आयोजित की।

इसके अतिरिक्त ललित शर्मा जी ने बहुत से शिविरों में भी हिस्सा लिया। अतः ललित शर्मा जी ने अनेको एकल व सामूहिक प्रदर्शनियों में एवं शिविरों में प्रतिभाग किया।

ललित शर्मा जी राजस्थानी समकालीन कला के एक ऐसे कलाकार है जिन्होंने राजस्थानी कला में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने चित्रण की विभिन्न तकनीकों जैसे जलरंग, तैलरंग, एक्रेलिक, लिथोग्राफ, एचिंग, वुडकट व मृणाशिल आदि बहुत सी तकनीकों में कार्य किया है। ललित शर्मा जी ने एक कलाकार के रुप में स्वतंत्र होकर कार्य किया है। इन्होंने अपनी कलाकृतियों के माध्यम से देश ही नही वरन् विदेशो में भी ख्याति प्राप्त की है। इन्होंने राजस्थान में पिछवई कला तथा लघु चित्रण शैली के माध्यम से एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। वर्तमान में भी ललित शर्मा जी का चित्रण कार्य निरन्तर प्रगति पर है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. https://www.bougainvillaea.co.in
2. जनसत्ता दिल्ली, 12 नवम्बर, 2006
3. https://thearkin/artists/lalit-sharma
4. https://www.bougainvillaea.co.in
5. https://thearkin/artists/lalit-sharma
6. anslate.googleusercontent.com